nbt.india
एक: सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

# नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

सितंबर 2013 वर्ष 18, अंक 9

**अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस, 8 सितंबर**

## साक्षरता, शांति और विकास

### राष्ट्रपति का आह्वान

"भारत का यह प्रयास होना चाहिए कि वह न केवल साक्षरता दर को वैश्विक स्तर तक ले जाए बल्कि इसे दुनिया के शीर्ष देशों के बराबर पहुँचाए। ...अब समय आ गया है कि हम अपनी साक्षरता दर को बेहतर बनाने के लिए समग्र और नए उत्साह के साथ प्रयास करें।" विश्व साक्षरता दिवस, 8 सितंबर के अवसर पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति महामहिम **श्री प्रणव मुखर्जी** ने उक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

महामहिम ने साक्षरता में वर्तमान लैंगिक अंतर को दूर करने के लिए बालिकाओं और महिलाओं पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि हमें राष्ट्रीय, राज्य, जिला, ब्लॉक और ग्राम पंचायत जैसे सभी स्तरों पर प्रयास करने की आवश्यकता है। इसमें सरकारी एजंसियों के साथ ही प्रतिष्ठित संगठनों, गैर-सरकारी संस्थाओं और निजी क्षेत्रों का भी सहयोग लेना चाहिए।

राष्ट्रपति महोदय ने इस बात पर अपनी खुशी प्रकट की कि इस साल भारत में मनाए जा रहे अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस में विशेष ध्यान साक्षरता, शांति और विकास पर है। महामहिम ने कहा, "शिक्षित मस्तिष्क शांति और विकास में योगदान करता है।"

**साक्षरता मनुष्य की आधारभूत आवश्यकता है और शिक्षा का मूल है। –प्रणव मुखर्जी,** *भारत के राष्ट्रपति*

**हम भारत राष्ट्र का निर्माण तब तक नहीं कर सकते, जब तक अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान नहीं करें। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में पूरे देश में फैलाने की कोशिश की, ताकि राष्ट्र मजबूत बन सके।**

**संदर्भ : हिंदी दिवस, 14 सितंबर –गृहमंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे**
(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, दिल्ली के एक कार्यक्रम में)

### मानव संसाधन विकास मंत्री ने कहा :

इस अवसर पर मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय **डॉ. एम.एम. पल्लम राजू** ने कहा कि साक्षर भारत योजना के तहत हमारा लक्ष्य 2017 तक 15 से 35 आयु वर्ग की महिलाओं में सौ फीसद साक्षरता हासिल करना है। मंत्री महोदय ने कहा कि महिलाओं, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों व अल्पसंख्यकों आदि में साक्षरता दर बढ़ाने के लिए दोहरी ताकत से प्रयास करने की आवश्यकता है।

विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री श्री जितिन प्रसाद एवं डॉ. शशि थरूर की सम्मानित अतिथि के रूप में गरिमामयी भागीदारी रही।

### साक्षर भारत के 4 वर्ष पूर्ण होने का समारोह

विदित हो कि 8 सितंबर, 2013 को देश में साक्षर भारत कार्यक्रम के 4 वर्ष पूरे हो गए। 8 सितंबर, 2009 से प्रारंभ साक्षर भारत

**मानव का दानव होना उसकी हार है; मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है।**
**–सर्वपल्ली राधाकृष्णन**
भारत के द्वितीय राष्ट्रपति

**सर्जनात्मक अभिव्यक्ति एवं ज्ञान में आनंद पैदा करना एक शिक्षक की सर्वोच्च कला होती है। –अल्बर्ट आइन्स्टीन**

कार्यक्रम की सफलता के उत्साहवर्धक आंकड़े : 2.13 करोड़ प्रौढ़ साक्षर प्रमाणित; 1.48 लाख लोक शिक्षा केंद्र स्थापित; 15.5 लाख स्वैच्छिक शिक्षक संघटित; 18.5 लाख प्रौढ़ों को विभिन्न व्यवसायों में कौशल प्रशिक्षण।

**रा.सा.मि.प्रा. को सम्मान**

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण (रा.सा.मि.प्रा.–एन.एल.एम.ए.) को यूनेस्को किंग सेजोंग साक्षरता पुरस्कार 2013 प्रदान किया गया।

यह पुरस्कार साक्षरता और प्रौढ़ शिक्षा के उन्नत गुणवत्ता मानदंडों के जरिए एक पूर्ण साक्षर समाज की स्थापना के प्रति कार्यक्रम के दृढ़ संकल्प की प्रशंसा में प्रदान किया गया।

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में साक्षरता के प्रति विशिष्ट कार्यों के लिए सम्मानित :

1. राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण : छत्तीसगढ़
2. जिला लोक समितियाँ :
   - कोरिया (छत्तीसगढ़)
   - अरियालुर (तमिलनाडु)
3. ग्राम पंचायतें :
   - पटना (कोरिया जिला, छत्तीसगढ़)
   - अजनी (बेगूसराय जिला, बिहार)
   - कुप्पानडेम पलयम (ईरोड जिला, तमिलनाडु)
4. रिसोर्स सपोर्ट संस्थाएँ :
   - राज्य संसाधन केंद्र, शिलांग (मेघालय)
   - जन शिक्षण संस्थान, अनंतपुर (आंध्र प्रदेश)

## राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण (एनएलएमए)

- 100% महिला साक्षरता लक्ष्य हासिल करने के लिए ग्राम पंचायतों और ग्राम समुदायों के साथ मिलकर काम कर रहा है।
- 1.48 लाख ग्राम पंचायतों में पुस्तकालय और पठन कक्ष (रीडिंग रूम) सुविधाओं से युक्त लोक शिक्षा केंद्रों की स्थापना।
- ग्रामीण प्रौढ़ों, विशेषकर महिलाओं में निर्वाचन, कानूनी एवं वित्तीय साक्षरता की ज्योति जगाकर कामकाजी साक्षर और सशक्त बनाने के लिए संगठित करना।

**साक्षरता दर 2001 में 64.8% से बढ़कर 2011 में 74.6% हो गई।**

# दक्षिण एशिया में साक्षरता, शांति और विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

"निरक्षरता और अज्ञानता को मिटाने तथा प्रबुद्ध समाज बनाने के लिए क्षेत्र के देश अपने अनुभवों का आदान-प्रदान कर आपसी सहयोग कर सकते हैं।" उपराष्ट्रपति माननीय **डॉ. हामिद अंसारी** ने नई दिल्ली में 7 सितंबर को दक्षिण एशिया में साक्षरता, शांति और विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए यह उद्गार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि विश्व के निरक्षर लोगों में से करीब आधे यानी 40 करोड़ दक्षिण एशिया में हैं जो चिंता का विषय है। डॉ. अंसारी ने कहा, "साक्षरता, शांति तथा विकास एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।"

उपराष्ट्रपति महोदय ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा, "साक्षरता के बिना लोग विकास का पूरा फायदा नहीं उठा पाते। इसके साथ ही अज्ञान, असहनशीलता और सामाजिक भेदभाव को दूर करने के लिए भी साक्षरता महत्वपूर्ण है।"

इस अवसर पर मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय डॉ. एम. एम. पल्लम राजू ने भारत में साक्षरता बढ़ाने में साक्षर भारत कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि "विश्व का यह सबसे बड़ा साक्षरता कार्यक्रम अपने विकेंद्रित स्वरूप के कारण सफल हुआ है।"

सम्मेलन में अफगानिस्तान, पाकिस्तान, श्रीलंका और भूटान के प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार रखे।

# दिल्ली हाट में कृति साक्षरता प्रदर्शनी

साक्षरता दिवस के अवसर पर दिल्ली में अनेक कार्यक्रमों की कड़ी में दिल्ली हाट में कृति साक्षरता प्रदर्शनी एक विशिष्ट आयोजन रहा। 7 से 9 सितंबर तक आयोजित

**क्या आप जानते हैं : वर्ष 1951 में देश में साक्षरता की दर 18 फीसद थी, लेकिन 2011 में चार गुना बढ़कर यह दर 74 फीसद हो गई है। 12वीं योजना के अंत तक 80 फीसद साक्षरता दर हासिल करने और लैंगिक अंतर को 16 फीसद से घटाकर 10 फीसद तक करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।**

**मैं सुनता हूँ और भूल जाता हूँ। मैं देखता हूँ और मुझे याद रहता है। मैं करता हूँ और समझ जाता हूँ। –चीनी कहावत**

## ''मैं बेहद खुश हूँ!'' –शशि थरूर

दिल्ली हाट में कृति साक्षरता प्रदर्शनी का उद्घाटन मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री, माननीय श्री शशि थरूर ने किया। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में उन्होंने कहा, ''कृति की प्रदर्शनी में देशभर के हस्तशिल्प भी प्रदर्शित हैं। इन्हें यहाँ सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया है। इसे देखकर मैं बेहद खुश हूँ।'' मंत्री महोदय ने कहा कि जन शिक्षण संस्थानों का उद्देश्य साक्षरता के साथ-साथ आजीविका के अवसर भी उपलब्ध कराना है। जन शिक्षण संस्थान अपने उद्देश्य में सफल रहे हैं। श्री थरूर विभिन्न स्टॉलों के अवलोकन के क्रम में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के स्टॉल पर भी पधारे, जहाँ उन्हें स्टॉल प्रभारी श्री एम.एल. भाटिया द्वारा पुस्तकों का एक सेट भेंट किया गया। 'जयहिंद' बोलकर उन्होंने अपने संबोधन का समापन किया।

दिल्ली हाट में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के स्टॉल पर

इस प्रदर्शनी में साक्षरता और कौशल का मेल देखने को मिला।

विदित हो कि स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग शिक्षा के प्रारंभिक स्तर के वयस्कों को व्यावसायिक कौशल प्रदान करने के लिए जन शिक्षण संस्थान नाम से एक विशिष्ट योजना संचालित कर रहा है। देश के विभिन्न भागों में लगभग 300 जन शिक्षण संस्थाएँ हैं। इन संस्थाओं द्वारा चलाए जाने वाले कार्यक्रमों के द्वारा लगभग 5 लाख वयस्कों ने साक्षरता और व्यावसायिक कौशल प्राप्त की है।

जन शिक्षण संस्थानों के लाभार्थियों द्वारा निर्मित उत्पादों को प्रदर्शित करने एवं लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण द्वारा समय-समय पर कृति साक्षरता प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है, जिसमें बड़ी संख्या में जन शिक्षण संस्थान भाग लेते हैं।

इस बार भी कृति साक्षरता प्रदर्शनी के दौरान विभिन्न संस्थाओं के समूहों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में लगाए गए स्टॉलों में जो सामग्री विक्रयार्थ प्रदर्शित थीं उनमें थीं–बाँस शिल्प, पेंटिंग, बैग, चर्म उत्पाद, कृत्रिम आभूषण, कपड़े आदि। इसके अलावा, पुस्तकों की भी प्रदर्शनी लगी थी। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के स्टॉल पर नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें (विक्रयार्थ) एवं साक्षरता संवाद के अंकों को प्रदर्शन के लिए रखा गया था।

इस अवसर पर छायाचित्रों की एक विशिष्ट प्रदर्शनी भी लगाई गई थी, जिसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा साक्षरता विषयक कार्यक्रमों के छायाचित्र प्रदर्शित थे। विभिन्न जन शिक्षण संस्थानों की छात्राओं द्वारा नृत्य-प्रस्तुति विशिष्ट आकर्षण था।

### त्रिपुरा ने केरल को पछाड़ा!

8 सितंबर, 2013 को साक्षरता दिवस पर त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक सरकार ने यह दावा किया कि उनके राज्य ने साक्षरता दर में केरल को पीछे छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि त्रिपुरा में अब 94.65 फीसद लोग साक्षर हैं जबकि केरल में यह 93.91 फीसद है। उन्होंने कहा कि हमने साक्षरता दर में केरल को पीछे छोड़ दिया है और अब हम देश के सर्वाधिक साक्षर राज्यों में प्रथम स्थान पर हैं। विदित हो कि अगस्त, 2012 में राज्य में सर्वेक्षण के दौरान यह आँकड़ा सामने आया। पूर्वोत्तर के एक अन्य राज्य, मिजोरम की साक्षरता दर केरल से थोड़ा ही कम, 91.58 फीसद है। विदित हो कि औसत राष्ट्रीय साक्षरता दर 74.06 फीसद है।

### राजधानी दिल्ली में साक्षरता

देश की राजधानी दिल्ली में साक्षरता दर 86.34 फीसद है। 2011 की जनगणना में पिछली जनगणना, 2001 के मुकाबले दिल्ली में साक्षरता अनुपात में लगभग 5 फीसद की बढ़ोतरी हुई है। लेकिन पुरुष और महिलाओं के अनुपात में अभी भी असमानता है। ग्रामीण महिलाओं का साक्षरता अनुपात लगभग 16 फीसद कम है। *पुरुष साक्षरता* : 91.03 फीसद; *महिला साक्षरता* : 80.93 फीसद

### तिहाड़ जेल में साक्षरता कार्यक्रम!

देश की सबसे व्यवस्थित और हाइप्रोफाइल जेल, दिल्ली के तिहाड़ जेल में भी कैदियों को साक्षर बनाने के लिए एक कार्यक्रम चल रहा है–पढ़ो-पढ़ाओ साक्षरता कार्यक्रम। इससे यहाँ शिक्षा की ऐसी अलख जगी है कि कैदी इससे जुड़कर निरक्षरता को मिटाने में जी-जान से जुटे हैं। तिहाड़ जेल की साक्षरता दर 40 फीसद है। पढ़ो-पढ़ाओ साक्षरता कार्यक्रम से जेल में साक्षरता दर 20 फीसद बढ़ गई है। विदित हो कि यह कार्यक्रम तिहाड़ जेल प्रशासन और साक्षरता मिशन का संयुक्त उद्यम है। उल्लेखनीय है कि तिहाड़ की सभी नौ जेलों के 2000 से अधिक कैदी इस कार्यक्रम से जुड़े हुए हैं। जेल प्रवक्ता के अनुसार नए कैदी भी बड़े उत्साह से इस कार्यक्रम से जुड़ रहे हैं।

**सीखकर आप किसी को शिक्षा दे सकते हैं और शिक्षा देकर आप समझ सकते हैं। –लैटिन कहावत**

## हिंदी दिवस, 14 सितं. आप कहते हैं

यदि हम भारत की कोई राष्ट्रभाषा बनाना चाहते हैं तो हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है। –महात्मा गाँधी

"मैंने हिंदी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर से कन्याकुमारी और आसाम से लेकर केरल तक के गाँव-गाँव में जाकर भूदान-ग्रामदान का क्रांतिपूर्ण संदेश जनता तक न पहुँचा पाता। यदि मैं मराठी भाषा का सहारा लेता तो महाराष्ट्र से बाहर कहीं काम न बनता। इसी तरह, अँग्रेजी भाषा को लेकर चलता तो कुछ प्रांतों में काम चलता परंतु गाँव-गाँव में जाकर क्रांति की बात अँग्रेजी के द्वारा नहीं हो सकती थी। इसीलिए मैं कहता हूँ कि हिंदी का मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है, इसने मेरी बहुत बड़ी सेवा की है।"
–विनोबा भावे

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में प्रांतीय भाषाओं की हानि नहीं, वरन लाभ है। –अनंत शयनम आयंगर

राष्ट्र को राष्ट्रध्वज की तरह राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है और यह स्थान हिंदी को प्राप्त है। –अनंत गोपाल शेवड़े

बोली के मोह में पड़कर निज भाषा का महत्व न भूलो
निज भाषा के मोह में पड़कर हिंदी भाषा का स्थान न भूलो।
–डॉ. एस. सुब्रमणियम

हिंदी ही एक भाषा है, जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है। –डॉ. ग्रियर्सन

राष्ट्र की एकता को यदि बनाकर रखा जा सकता है तो उसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है। –सुब्रह्मण्यम भारती

बिना राष्ट्रभाषा के राष्ट्र की कल्पना असंभव है।
–मराठी कवि कुसुमाग्रज

संस्कृत माँ, हिंदी गृहिणी और अँग्रेजी नौकरानी है।
–फादर कामिल बुल्के

हिंदी का क्षेत्र विश्व में फैला विशाल है
अनेकता में एकता की ये मिसाल है। –दुर्गा चरण मिश्र

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।
–भारतेंदु हरिश्चंद्र

## जयंती पर नमन!

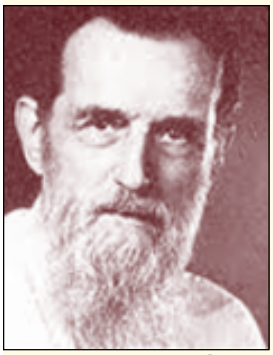

फादर कामिल बुल्के
1 सितंबर, 1909

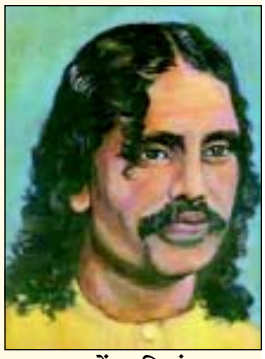

भारतेंदु हरिश्चंद्र
9 सितंबर, 1850

गोविंद बल्लभ पंत
10 सितंबर, 1887

विनोबा भावे
11 सितंबर, 1895

सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया
15 सितंबर, 1861

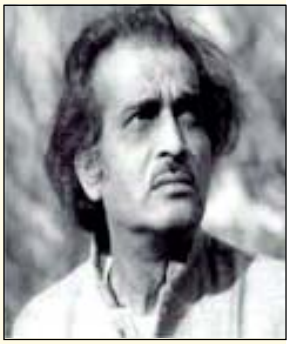

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
15 सितंबर, 1927

रामधारी सिंह दिनकर
23 सितंबर, 1908

भगत सिंह
28 सितंबर, 1907

जीवन की पूर्ण और परिशुद्ध शांति के लिए और कोई जगह नहीं है सिवाय एकांत, एक विश्वासी मित्र, और एक अच्छे पुस्तकालय के। –आफरा बेन

# हिंदी दिवस, 14 सितंबर पर विशेष काव्यमयी प्रस्तुति

## भारत की शान है हिंदी

**बद्री प्रसाद वर्मा अनजान**

हर भाषा की मान है हिंदी
भारतभू की शान है हिंदी
भारत के हर नागरिक की
सबसे बड़ी पहचान है हिंदी।

नहीं लगती है अटपटी
सबको लगती मीठी हिंदी
घर-घर में यह बोली जाती
मिस्री-सी मीठी लगती हिंदी।

हर भाषा से प्यार है करती
किसी से बैर न रखती हिंदी
हर भाषा में घुल-मिल जाती
हर जुबान की शान है हिंदी।

अब तो भारत में ही क्या
विदेशों में पढ़ाई जाती हिंदी
दुनिया की दूसरी बड़ी भाषा
विश्व में कहलाती हिंदी।

*गोरखपुर, उ.प्र.*

## पूरे का पूरा हिंदुस्तान है हिंदी

**आलोक भट्टाचार्य**

पढ़-अनपढ़-मूरख-पंडित की जुबान है हिंदी
धनिकों की है विनय और निर्धन की शान है हिंदी
हिंदू, मुसलिम, सिख, जैन, पारसी, बौद्ध, ईसाई
सच यह है, पूरे का पूरा हिंदुस्तान है हिंदी!
फूल हो, हो काँटा, शबनम हो, या हो चट्टान
हिंदी की धरती की, हर इक चीज है हिंदी
सिर्फ भाषा ही नहीं है, प्राण है यह तो
अन्न-जल है, खाद है, और बीज है हिंदी।
खूबसूरत श्रम है, खुशबूदार ताकत है
सबसे भली जो चीज वह नाचीज है हिंदी
इतना बड़ा यह देश, इतने लोग, इतने रंग
एकता के मंत्र का ताबीज है हिंदी।

## गर्व करो हिंदी पर

**विश्वनाथ शर्मा 'विमल'**

कोटि-कोटि कंठों में रमती
बोली जाती घर-घर
हास और परिहास परस्पर
हिंदी भाषा ही पर।

पंत निराला दिनकर तुलसी
सूर जायसी भूषण
रत्नाकर पद्माकर केशव
हिंदी भाषी कविगण।

हम देसी, परदेशी भाषा
थोपी जाती सब पर
सभ्य समाजहि बीच खड़ी हो
बनी बिजूकी आकर।

नकल करो पर अकल न छोड़ो
संदेह न लाओ माँ पर
अपनाओ दुलराओ हिंदी
गर्व करो हिंदी पर।

*भोपाल, म.प्र.*

## मन करता है

**डॉ. गोपाल बाबू शर्मा,** *आगरा, उ.प्र.*

मन करता है नदी बनें हम
रुकें नहीं बस बढ़ते जाएँ
लाएँ ऊसर में हरियाली
प्यासों की हम प्यास बुझाएँ।

मन करता है पेड़ बनें हम
जिसकी घनी, बड़ी हो काया
मीठे-मीठे फल दें सबको
बाँटें अपनी शीलत छाया।

मन करता है दिया बनें हम
नहीं आँधियों से घबराएँ
अंधकार को दूर भगाकर
हम पथिकों को राह दिखाएँ।

मन करता है हवा बनें हम
शीतल, मंद, सुगंधित अनुपम
छूकर, ताप हरें हम सबके
नई उमंगों की दें सरगम।

**वे, जो बच्चों को शिक्षित करते हैं, माता-पिता से अधिक सम्माननीय हैं, क्योंकि माता-पिता तो बच्चे के केवल जीवनदाता हैं, लेकिन शिक्षक उन्हें जीने की कला सिखाते हैं। –अरस्तू**

अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है,
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।
जहाँ नहीं साहित्य, वहाँ आदर्श कहाँ है,
जहाँ नहीं आदर्श, वहाँ उत्कर्ष कहाँ है?
–राय देवी प्रसाद पूर्ण

जिसको न निज गौरव
तथा देश का अभिमान है
वह नर नहीं, नरपशु निरा है,
और मृतक समान है।
–आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिंदी ज्ञान मेरे लिए अमृतपान है
जितनी बार उसे पीता हूँ
उतनी बार लगता है
पुनः जीता हूँ।
**–डॉ. ओदोलेन स्मेकल,**
भारत में चेकोस्लोवाकिया के
पूर्व राजदूत एवं हिंदीप्रेमी

हर महिला जब होगी साक्षर
तभी बनेगा भारत साक्षर।
**रचना सिद्धा,** जयपुर, राजस्थान

जब पढ़ेंगे, तभी बढ़ेंगे
शक्ति पाकर, शिखर चढ़ेंगे।
**आनंद बिल्थरे,** बालाघाट, म.प्र.

**राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा होता है। –महात्मा गाँधी**

## पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ *साक्षरता संवाद* का पहली बार कोई अंक देखने को मिला (अगस्त 2013)। सचमुच काफी अनूठी है। पढ़कर लगा, पत्रिका काफी समय से शिक्षा-साक्षरता के प्रचार-प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। अब यही इच्छा है कि जीवन भर इसे पढ़ता रहूँ।
**रामगोपाल 'राही',** लाखेरी, बूँदी, राजस्थान

☐ अगस्त अंक में मुखपृष्ठ पर राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़े चिह्नों-प्रतीकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई थी। वर्ष 2013 को अंतरराष्ट्रीय जल सहयोग वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है यह जानकारी बहुतों को नहीं होगी, आपने ज्ञान बढ़ाया। हॉकी के जादूगर ध्यानचंद को याद करना प्रासंगिक था। 'नन्ही लड़की' शीर्षक कविता बेहद मार्मिक लगी। इसमें दुनिया को बचाए रखने का संकल्प है और संदेश भी। बेहतरीन रचनाओं के चयन एवं साज-सज्जा के लिए संपादक मंडल को बधाई।
**जगदीश गुप्त,** कटनी, म.प्र.

☐ साक्षरता संवाद महज पत्रिका नहीं ज्ञान का आगार है। हर अंक में कुछ-न-कुछ ऐसा ज्ञान अवश्य होता है जो कब, कहाँ, किस रूप में काम आ जाए, कहा नहीं जा सकता। ऐसे अद्भुत उपक्रम हेतु आभार, धन्यवाद।
पुस्तकीय श्रेष्ठता का महानतम नारा है
जीवन लक्ष्य-प्राप्ति ही श्रेष्ठ ज्ञान की धारा है।
**शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल',** गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखंड

☐ अगस्त अंक–श्रेष्ठ कविताएँ, राष्ट्रभक्ति का भाव, स्वातंत्र्य का उद्घोष; साथ ही, साक्षरता का दीप प्रज्वलित करती रचनाएँ। सच में आनंद आ गया। आशा ही नहीं विश्वास है कि उत्कृष्टता का यह स्वरूप यथावत रहेगा। यही कहूँगा कि–रहे आबाद, साक्षरता संवाद, करता हूँ अभिनंदन, देता हूँ साधुवाद।
*साक्षरता संवाद* मेरे लिए / बन गया है प्यार
मनभावन, हियकर / मासिक उपहार
जिसमें जगमगा रहा है / पुस्तकों का संसार
सदा होता रहेगा इसका प्रसार / यही नजर आते हैं
'शरद' को आसार। **प्रो. शरद नारायण खरे,** मंडला, म.प्र.

☐ साक्षरता संवाद दिनोंदिन निखार पर है, शिखर की ओर है; आपकी सोच एवं श्रम को साधुवाद। **राकेश चक्र,** मुरादाबाद, उ.प्र.

☐ कविता 'संक्षेप में बहुत कुछ' कहने का साधन है, इसका अच्छा उपयोग साक्षरता संवाद में होता है। पत्रिका निस्संदेह बड़ा काम करने में सक्षम बन गई है।
जनहितकारी पत्रिका, *साक्षरता संवाद*
इसका होना चाहिए, जगह-जगह अनुवाद
जगह-जगह अनुवाद अपढ़ जो पढ़ना सीखें
पढ़े-लिखे भी पढ़कर इसको बढ़ना सीखें
विविध पत्रिकाओं में इसकी महिमा न्यारी
अति संक्षिप्त ज्ञान पर इसमें जनहितकारी।
**डॉ. बी.पी दुबे,** सागर, म.प्र.

☐ **सा. सं.** का अप्रैल 2013 अंक अचानक हाथ लग गया। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक और ज्ञानवर्धक लगीं। खासकर पुस्तक पर केंद्रित रचनाएँ और कविताएँ बेहद उपयोगी, प्रेरक एवं मनमोहक लगीं। **धनंजय मिश्र,** पुनसिया, बाँका, बिहार

☐ **सा. सं.** का हर अंक अनूठा होता है। आप ख्यातिलब्ध के साथ-साथ अल्पज्ञात रचनाकारों की रचनाओं को भी पत्रिका में स्थान देते हैं यह महत्वपूर्ण बात है। **डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी,** बरेली, उ.प्र.

***रचनाकार कृपया ध्यान दें :*** **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

## कविता

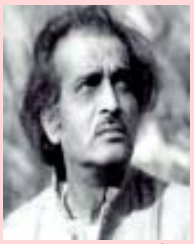

ज. : 15.9.1927
नि. : 24.9.1983

पाठशाला खुला दो महाराज
मोर जिया पढ़ने को चाहे !

आम का पेड़ ये
ठूंठे का ठूंठा
काला हो गया
हमरा अंगूठा

यह कालिख हटा दो महाराज
मोर जिया लिखने को चाहे,
पाठशाला खुला दो महाराज
मोर जिया पढ़ने को चाहे !

'ज' से जमींदार
'क' से करिन्दा
दोनों खा रहे
हमको जिन्दा

कोई राह दिखा दो महाराज
मोर जिया बढ़ने को चाहे,
पाठशाला खुला दो महाराज
मोर जिया पढ़ने को चाहे !

अगुनी भी यहां
ज्ञान बघारे
पोथी बांचे
मन्तर उचारे

उनसे पिण्ड छुड़ा दो महाराज
मोर जिया उड़ने को चाहे,
पाठशाला खुला दो महाराज
मोर जिया पढ़ने को चाहे !

☐ स्व. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

मिसाल

## रजिया : शिक्षा की रौशनी भर देना चाहती है वह

''...अगर मुश्किलों से डरने लगी तो कुछ नहीं कर पाऊँगी।'' जिला मेरठ के नांगला कुंभा गाँव की 12वीं की छात्रा, 16 वर्षीया रजिया सुल्ताना मुस्कराकर जब यह कहती है तो उसके चेहरे पर आत्मविश्वास की सुदृढ़ लकीरों को भी साफ-साफ देखा जा सकता है। रजिया आज दुनिया भर में एक चर्चित नाम बन गई है, क्योंकि उसे संयुक्त राष्ट्र ने हाल ही में 'प्रथम मलाला पुरस्कार' के लिए चुना है। मलाला पाकिस्तान की वह बहादुर लड़की है जिसने तालिबान की धमकियों की परवाह न कर लड़कियों की शिक्षा के लिए गाँव-गाँव में अभियान चलाया था। और रजिया भी उसी राह पर है। वह पिछले छह-सात सालों से बाल मजदूरी के विरुद्ध अभियान चलाए हुए है, साथ ही बाल मजदूरी से मुक्त बच्चों को स्कूलों में दाखिला भी कराने में सहयोग कर रही है। रजिया और उसके साथी अब तक 50 से अधिक बच्चों का स्कूलों में दाखिला करवा चुके हैं।

रजिया की यह यात्रा सात साल पहले शुरू हुई जब उसके गाँव में 'बचपन बचाओ' के कार्यकर्ता आए थे। शिक्षा का महत्व समझाते हुए यह संगठन गाँव-गाँव में घूमकर बाल पंचायत का भी गठन कर रहा था। रजिया अपने गाँव में इस पंचायत की अध्यक्ष चुनी गई। और तबसे उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस शिक्षा अभियान के सिलसिले में वह नेपाल तक गई और वहाँ के प्रधानमंत्री तक इस लड़की के जज्बे को देखकर अचंभित रह गए। वैसे, रजिया को

*अगले पृष्ठ पर जारी...*

*पिछले पृष्ठ का शेष...*

इस अभियान के लिए विरोध सबसे पहले अपने घर में ही झेलना पड़ा था, पर पिता का यह विरोध बेटी के जुनून के आगे फीका पड़ गया। रजिया अपना असल प्रेरणास्रोत खुद को ही मानती है और गाँव-गाँव घूमकर वह जागरूकता अभियान चला रही है। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री गार्डन ब्राउन आठ महीने पहले जब भारत आए तब उन्हें रजिया के इस अभियान की जानकारी मिली और उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में उसके नाम का प्रस्ताव इस पुरस्कार के लिए रखा।

12वीं की परीक्षा की तैयारी कर रही रजिया कहती है, ''अब सारी उम्र मुझे यही सब करना है।'' रजिया के जिद, जज्बे और जुनून को हम भी सलाम करते हैं!

(*तहलका,* 15 अगस्त के आलेख का संपादित रूप –संपा.)

**अक्षर-अक्षर सीखकर**
**पुस्तक पढ़ना सीखो**
**ज्ञान बढ़ेगा, मान बढ़ेगा**
**रहे न जीवन फीको।**
**रूपनारायण काबरा,** जयपुर, राजस्थान

**R. N.I. No. 65414/96**
**Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14**
**Licence to post without prepayment**
**L. No. U(SW) 22/2012-14**
**Mailing date 25/26 same month**
**Date of publication 15/9/2013**

**जिस दिन भारत के सब लोग**
**अपनी पसंद से चुनी हुई सबकी बोली**
**हिंदी को अपनी जानेंगे**
**जानेंगे केवल नहीं, वरन आसानी से**
**हिंदी में करके कामकाज सुख मानेंगे**
**बस उसी दिवस दासत्व न रहने पाएगा**
**बस उसी रोज सच्चा स्वराज्य आ जाएगा।**

तमिल कवि मुरूगनार की लिखी रचना का रामधारी सिंह 'दिनकर' ने यह अनुवाद प्रस्तुत किया। **–संपा.**

**प्रतिदिन पढ़िए नई या पुरानी एक अच्छी किताब**
**खिलते रहेंगे जीवन में खुशियों भरे गुलाब!**
**दिलीप भाटिया,** रावतभाटा, राजस्थान

**हिंदी दिवस**
**मनाए पूरा देश**
**हर्षित मन।**
**डॉ. दयानिधि,**
*बरगढ़, ओड़िशा*

**पढ़ो-पढ़ो-पढ़ो**
**बढ़ो-बढ़ो-बढ़ो**
**खुशहाली की सीढ़ियाँ**
**चढ़ो-चढ़ो-चढ़ो।**
**जगदीश गुप्त,** कटनी, म.प्र.

**'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।**

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

**राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत**
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

**भारत सरकार सेवार्थ**

**डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :**
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070